तीव्र पुरुषार्थ - 20

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ ईश्वरीय पालना का कर्तव्य भी चल ही रहा है। अब लाइट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मों और हर आत्मा के तमोगुण और प्रकृत्ति के तमोगुणी संस्कारों को भस्म करने का कर्तव्य चलना है। **अब समझा कि कौन-से कर्तव्य का अभी समय है?** तपस्या द्वारा तमोगुण को भस्म करने का।

➳ _ ➳ जैसे अपने चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एक रस स्थिति के आसन पर स्थित हो तपस्वी रूप अपना प्रत्यक्ष दिखाओ। । (19/04/1971)

➢➢ ब्राह्मणों के कौन कौन से कर्तव्य रहे हुए हैं ?

➳ _ ➳ स्वयं के प्रति

→ स्वयं को योगी बनाना

→ स्वयं को शक्तिशाली बनाना

→ स्वयं को जागृत करना

→ स्वयं को निर्विघन बनाना

➳ _ ➳ दूसरों के प्रति

→ वर्से का अधिकारी बनाना

→ उमंग उत्साह दिलाना

→ संस्कार परिवर्तन में मदद करना

➳ _ ➳ यज्ञ के प्रति

→ यज्ञ को निर्विघन बनाना

→ वातावरण को पावरफुल बनाना

➳ _ ➳ ब्राह्मण परिवार के प्रति

→ आपस में रूहानी स्नेह उत्पन्न करना

- इर्ष्या, द्वेष, घृणा बिलकुल भी नहीं

→ आपस में एकता

- कोई मनमुटाव नहीं

→ सहनशीलता

- जो जितना सहन करेगा, वह उतना ही शहन्शाह बनेगा

➳ _ ➳ जो ज्ञान छोड़कर चले गए

→ उन्हें वापिस लाना है

➳ _ ➳ एडवांस पार्टी की आत्माओं के प्रति

→ देवताओं के मां बाप के गर्भ को पावन करना

- उनका अपने योगबल से
- ब्राह्मण परिवार के साकाश से
- भगवान की डायरेक्ट साकाश से

➳ _ ➳ भक्त आत्माओं के प्रति

→ भटकने से छुडाना

→ अंधविश्वास से छुडाना

→ वैराग उत्पन्न करना है

→ शुद्ध मनोकामनाएं पूरण करनी है

- स्वार्थ से भरपूर कामनाएं नहीं

➳ _ ➳ साधू / सन्यासियों / धर्म संस्थापको के प्रति

→ उन्हें भी सच्चे बाप से वर्सा दिलाना है

➳ _ ➳ भटकती हुई आत्माओं के प्रति

→ शांति देनी है

→ मुक्ति देनी है

➳ _ ➳ प्रकृति के प्रति

→ प्रकृति को पावन बनाना

➢➢ स्वयं से पूछें ?

➳ _ ➳ “आत्माओं का कल्याण हो जाएँ” - यह इच्छा ज्यादा है ?

➳ _ ➳ “या मैं यह सेवा कर रहा हूँ” - यह इच्छा ज्यादा है ?

→ कहीं इन सेवाओं के माध्यम से खुद के दबे हुए अहंकार की पूर्ति तो नहीं हो रही ?

→ क्या किसी दुसरे के निमित बनने पर भी आपको इतनी ही ख़ुशी होती है ?

→ सेवाएं सेवाओं के लिए कर रहे हो ? या मैं की तृप्ति के लिए कर रहे हो ?

→ यह विस्तार सेवाओं का विस्तार है ? या मैं का विस्तार है ?